हिन्दी गीतिकाव्य परंपरा में आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री का अवदान

राँची विश्वविद्यालय, राँची के मानविकी संकाय के

अंतर्गत हिन्दी विभाग में पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोध-निर्देशक

डॉ. नियति कल्प

सहायक प्राध्यापक

हिन्दी विभाग,

राँची विश्वविद्यालय,राँची

शोध-छात्र

विद्या वैभव भारद्वाज

हिंदी नेट उत्तीर्ण

हिंदी विभाग

राँची विश्वविद्यालय,राँची

घोषणा-पत्र

मैं, विद्या वैभव भारद्वाज यह घोषणा करता हूँ कि मैंनें डॉ. नियति कल्प जी के शोध-निर्देशन में 'हिन्दी गीतिकाव्य परंपरा में आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री का अवदान' विषय पर शोध कार्य करने हेतु प्रस्तुत शोध-सारांश पूर्ण किया है। मेरा यह काम पूर्णत: मौलिक एवं शोधपरक है। यह शोध विषय पहले के किसी कृत कर्म की पुनरावृत्ति नहीं है। मैं यह भी दावा नहीं करता कि इस विशिष्ट विषय पर मेरे द्वारा किया गया कार्य पहला और अंतिम है परंतु गीतिकाव्य की परंपरा में शास्त्री जी के भगीरथ प्रयास को समझने का यह मेरा मौलिक प्रयास है। मेरी जानकारी में इससे पूर्व राँची विश्वविद्यालय तथा अन्य किसी भी संस्था अथवा विश्वविद्यालय में इस विषय पर कोई शोध-कार्य नहीं हुआ है, इसकी पुष्टि मैंने **शोध गंगोत्री** वेबसाइट के माध्यम से भी की है।

शोधार्थी

विद्या वैभव भारद्वाज
हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय,राँची

डॉ० नियति कल्प

सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
रांची विश्वविद्यालय, राँची
पिन - 834008

निवास. डॉं.नियति कल्प, द्वारा डॉं.नामेश्वर सिंह
वर्द्धमान कम्पाउण्ड, विराज नगर
लालपुर, (झारखण्ड 834001)
मोबाईल नं०- 9430346083
ई मेल- niyatikalpru@gmail-com

पत्रांक ....

दिनांक ....

शोध-निर्देशन हेतु स्वीकृति-पत्र

मैं विद्या वैभव भारद्वाज को हिन्दी विभाग, मानविकी संकाय, राँची विश्वविद्यालय, राँची से पीएच०डी० उपाधि हेतु 'हिन्दी गीतिकाव्य परंपरा में आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री का अवदान' विषय पर शोध-निर्देशन के लिए स्वीकृति प्रदान करती हूँ।

मेरी जानकारी में इनका आचरण एवं व्यवहार उत्तम है।

(डॉं. नियति कल्प)

शोध-निर्देशक

1. प्रस्तावना

मानवीय भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति कला के माध्यम से होती है। 'कला' कल्याण की जननी है। कल्पना की सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति अनेक प्रकार से एवं विभिन्न माध्यमों द्वारा होती है। यह अभिव्यक्ति जिस भी माध्यम एवं प्रकार से हो वह कला क्षेत्र के अन्तर्गत स्थान रखती है। श्रेष्ठ कलाकृति का जन्म चैतन्यता और अंतर्मन के परस्पर सहयोग से ही होता है अर्थात जो सत् है, जो सुन्दर है, वही कला है। गीतिकाव्य वस्तुतः संगीत-कला और काव्य-कला जैसी दो श्रेष्ठ कलाओं का अद्भुत संगम है। भारतीय साहित्य में गीतिकाव्य की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। मानव मन की अभिव्यक्ति के साथ ही गीति-चेतना भी जागृत हुई। गेयता वस्तुतः मनुष्य को प्राकृतिक रूप से ही प्राप्त हुई है। यह उसे भावनात्मक रूप से संतुलित बनाए रखने में सहायक होती है। गीत अपनी अनुपम छन्दमयता और मधुर संगीतात्मकता के कारण मानव हृदय को आहलादित करने की अद्भुत क्षमता रखते हैं। भावों की सघनता को अभिव्यक्त करने वाले सक्षम गीत अतिशीघ्र ही मनुष्य हृदय से रागात्मक संबंध स्थापित कर लेते हैं।

हिन्दी गीतिकाव्य का मूल स्रोत संस्कृत साहित्य है। वास्तव में गीतितत्वों का प्राचीनतम रूप वेदमंत्रों में ही देखने को मिलता है। भारतीय संस्कृति में वैदिक काल से आज तक गीतिकाव्य की अविरल धारा प्रवाहित हो रही है। ऋग्वेद में दैवीय शक्तियों के लिए पद और गेय स्तुतियां सर्वत्र हैं। गीतिकाव्य की यह सुसंस्कृत परंपरा वेदों से होती हुई उपनिषद व पुराणों तक पहुंची, श्रीमद्भागवत महापुराण के अनेक लीला प्रसंगों को गीत से संबोधित किया गया है जैसे- गोपीगीत, वेणुगीत, युगल गीत, पिंगला गीत। संस्कृत गीतिकाव्य के सर्वाधिक समर्थ और लोकप्रिय गीतकार जयदेव प्रतीत होते हैं, जिनके द्वारा रचित गीतगोविन्द की प्रसिद्धि अपार है। गीतगोविंद में वर्णित राधा-कृष्ण के प्रेम वर्णन से प्रेरित होकर अनेक परवर्ती कवियों ने गीतिकाव्य रचे। पाली और प्राकृत भाषा में रचित 'गाथा' और 'गाहा' भी गीत शब्द के ही पर्याय हैं। अपभ्रंश साहित्य की रचनाओं में भी राग-रागनियों का समन्वय है, पुष्पदंत के 'महापुराण' और स्वयंभू के 'पउमचरउ' में अनेक स्थलों पर गीतात्मकता की सुगंध मिलती है। इस प्रकार हिन्दी गीतिकाव्य की पूर्वपीठिका के रूप में हमें गीतिकाव्य की एक सशक्त पृष्ठभूमि प्राप्त होती है जिसके प्रभाव से आगे चलकर हिन्दी गीतिकाव्य आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल से लेकर आधुनिक काल तक निरंतर समृद्ध होता रहा है।

वैदिककाल से प्रवाहित गीतिकाव्य की इस अविरल धारा को हर काल में कई सक्षम गीतकार मिले जिन्होंने इस विधा को सर्वाधिक लोकप्रिय बनाए रखा था। आधुनिक काल में छायावाद निश्चित रूप से गीतिकाव्य के लिए स्वर्णयुग कहा जा सकता है क्योंकि पंत, प्रसाद, महादेवी और निराला ने इस काल में गीतों को अप्रतिम ऊंचाई दी। गीतिकाव्य की इसी परंपरा को

छायावादोत्तर काल में एक अद्भुत गीतकार मिले, आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री। जिनके गीतों में छायावाद की महक के साथ-साथ लोक चेतना और आधुनिकता की ताजी हवा भी विद्यमान थी। शास्त्री जी का जन्म 5 फरवरी 1916 (माघ शुक्ल पक्ष द्वितीया विक्रम संवत 1973) को बिहार प्रान्त के गया जिले के 'मैगरा' नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम 'पण्डित रामानुग्रह शर्मा' था एवं माता का नाम 'अनुपमा देवी' था। लगभग सन् 1935 में महज उन्नीस वर्ष की अवस्था में शास्त्री जी द्वारा रचित संस्कृत कविताओं का संकलन 'काकली' के प्रकाशन ने संस्कृत - साहित्य जगत में हलचल मचा दी। जानकीवल्लभ शास्त्री एवं बाबा नागार्जुन को संस्कृत साहित्य के इतिहास में नवजागरण काल का प्रमुख संस्कृत कवि माना जाता है। सन् 1932 में इन्होंने महज 16 वर्ष की अवस्था में 'शास्त्री' की उपाधि प्राप्त की। सन् 1934-35 में इन्होंने स्वर्ण पदक के साथ साहित्याचार्य की उपाधि अर्जित की जिसके लिए इन्हें 'पूर्वबंग सारस्वत समाज, ढाका' के द्वारा 'साहित्यरत्न' घोषित किया गया। सन् 1935 में वे महाकवि रवींद्र नाथ टैगोर, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और जयशंकर प्रसाद के सघन सम्पर्क में आये। वे सन् 1936 में अध्यापन कार्य हेतु लाहौर चले गए और सन् 1937-38 में मध्यप्रदेश के रायगढ़ में राजकवि भी रहे। सन् 1940-41 में मुजफ्फरपुर आकर इन्होंने 'वेदांतशास्त्री' और 'वेदांताचार्य' की परीक्षाएं उत्तीर्ण की जिनमें ये पूरे प्रान्त में प्रथम आये फिर उन्हें सन् १९४४ में 'गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज' के साहित्य विभाग में प्राध्यापक नियुक्त किया गया, जहाँ आगे चलकर वे विभागाध्यक्ष भी बने और सन् 1952 तक अपनी सेवा दी। सन् 1953 में वे 'बिहार विश्वविद्यालय' के 'रामदयालु सिंह कॉलेज', मुजफ्फरपुर में हिन्दी के प्राध्यापक बने जहाँ से सन् 1979-80 में सेवानिवृत्त हुए।

कहा जाता है कि सन् 1935 में उन्नीस वर्षीय शास्त्री जी द्वारा रचित संस्कृत काव्य 'काकली' को पढ़, उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर निराला स्वयं उनसे मिलने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आए थे। उसके बाद निराला आजीवन शास्त्री जी के मार्गदर्शक व शुभचिंतक बने रहे, शास्त्री जी और निराला के संबंधों की घनिष्ठता ऐसी रही कि शास्त्री जी ने अपने आवास का नाम, 'निराला निकेतन' रखा था। शास्त्री जी के प्रस्तुत गीत -

जनम-जनम की पहचानी वह तान कहाँ से आई !

किसने बाँसुरी बजाई

अंग-अंग फूले कदंब साँस झकोरे झूले

सूखी आँखों में यमुना की लोल लहर लहराई !

किसने बाँसुरी बजाई

जटिल कर्म-पथ पर थर-थर काँप लगे रुकने पग

कूक सुना सोए-सोए हिय मे हूक जगाई !

किसने बाँसुरी बजाई

मसक-मसक रहता मर्मस्थल मरमर करते प्राण

कैसे इतनी कठिन रागिनी कोमल सुर में गाई !

किसने बाँसुरी बजाई

उतर गगन से एक बार फिर पी कर विष का प्याला

निर्मोही मोहन से रूठी मीरा मृदु मुस्काई !

किसने बाँसुरी बजाई

की अनुगूंज ऐसी थी कि भारतीय सिनेमा के पितामह कहे जाने वाले 'पृथ्वीराज कपूर' 'शास्त्री जी' से मिलने मुजफ्फरपुर(बिहार) खींचे चले आये, वह 'निराला निकेतन' के जिस कमरे में ठहरे थे, शास्त्री जी ने उनके सम्मान में उस कक्ष को 'पृथ्वीराज कक्ष' नाम दिया था। इस प्रकार किसी गीतकार के प्रति ऐसा आकर्षण न सिर्फ उस गीतकार बल्कि सम्पूर्ण गीतिकाव्य परंपरा के लिए शुभ संकेत था।

हिन्दी गीतिकाव्य की परंपरा में शास्त्री जी एक ऐसे समर्थ गीतकार हुए जिनके गीतों में श्रीकृष्ण की बांसुरी के समान आकर्षण रहा। शास्त्री जी के गीतों के प्रति पाठकों और श्रोताओं की मुग्धता आज भी देखने को मिलती है। प्रकाशित व अप्रकाशित मिलाकर उनके गीतों की संख्या लगभग डेढ़ हजार मानी जाती है। शास्त्री जी ने कई छंदबद्ध काव्य-कथाओं व काव्य-नाटकों की सर्जना की और राधा जैसे सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य का सृजन किया। शास्त्री जी ने साहित्य की हर विधा में अपनी कलम चलाई किन्तु इनकी सर्वाधिक प्रसिद्धि इनके गीतों के कारण हुई । शास्त्री जी न सिर्फ गीत लिखते थे बल्कि उन गीतों की प्रस्तुति भी असाधारण होती थी, शास्त्री जी कवि सम्मेलनों के बहुश्रुत कवि रहे। शास्त्री जी के गीतों में शिल्प का शीर्ष, दार्शनिकता की गहराई, संवेदना की व्यापकता और मधुरता की महक सर्वत्र विद्यमान है।

2. शोध-परिकल्पना

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना इस बात में निहित है कि हिन्दी साहित्य में गीतिकाव्य का आरंभिक स्वरूप क्या था? हिन्दी साहित्य में गीतिकाव्य की परंपरा क्या रही है? आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री का हिन्दी गीतिकाव्य की परंपरा को समृद्ध करने में क्या योगदान रहा है? आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के गीतिकाव्य की विशिष्टाएं क्या हैं? आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के गीतिकाव्य के वर्ण-विषय की प्रासंगिकता क्या हैं? आखिर शास्त्री जी के व्यक्तित्व और कृतित्व में ऐसी क्या विशिष्टताएं थीं कि वह हिन्दी साहित्य के दिग्गज व समकालीन वरिष्ठ साहित्यकारों के प्रिय रहे। प्रस्तुत शोध-कार्य में इन्हीं प्रश्नों का तथ्यपरक विश्लेषण और तार्किक उत्तर खोजने का प्रयत्न किया जाएगा।

3. पूर्व शोध-कार्य

- **आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री व्यक्तित्व और कृतित्व** – प्रो. आसनारायण शर्मा (ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा)

- **उत्तर छायावादी कविता और आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री** – विनिता सिंह (वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर)

- **आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री की काव्य भाषा** – वंदना अवस्थी (छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर)

- **आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री का काव्य : समीक्षात्मक अनुशीलन** – सचिन पूरी (सावित्रीबाई फुले, पुणे विश्वविद्यालय)

- **महाकवि जानकीवल्लभ शास्त्री के मातृपरक गीतों में संवेदना के आयाम** – बबिता कुमारी (बाबा भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरनगर)

- **सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और जानकीवल्लभ शास्त्री के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन** – मुकेश कुमार (बाबा भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरनगर)

4. शोध की प्रासंगिकता और महत्ता

आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री कहा करते थे कि उनका और निराला की प्रसिद्ध कविता ‘जुही की कली’ का जन्म एक ही वर्ष सन् 1916 में हुआ। निराला जी ने सर्वाधिक पत्राचार संभवतः शास्त्री जी से ही किया है जिसमें से कुछ पत्रों का प्रकाशन शास्त्री जी ने ‘निराला के पत्र’ नामक पुस्तक के रूप में भी किया। इस प्रकार स्वाभाविक रूप से शास्त्री जी पर सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ का सर्वाधिक प्रभाव रहा और उनका व्यक्तित्व भी निराला की भांति स्वाभिमानी, अक्खड़ और सहृदयता से परिपूर्ण रहा। मुजफ्फरपुर की यात्रा के दौरान यह अनुभव हुआ कि वहां के लोग आज भी शास्त्री जी को एक प्रकार से लोक देवता के रूप में पूजते व उनपर अटूट श्रद्धा रखते हैं। इस बात से यह पता चलता है कि उनका व्यवहार अपने प्रियजनों के प्रति कितना सहज, सरल, शांत और स्नेहयुक्त रहा होगा।

उनके व्यक्तित्व को समझने व साहित्य के अध्ययन के क्रम एक बात बार- बार मन में आ रही थी कि अतिविशिष्ट साहित्यिक क्षमता के धनी शास्त्री जी, जिनकी प्रतिभा के प्रसंशक महामना मदनमोहन मालवीय, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, रामधारी सिंह दिनकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, नंददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य शिवपूजन सहाय, नलिन विलोचन शर्मा जैसे ख्यातिलब्ध साहित्यकार रहे, उनके साथ तत्कालीन परिस्थितियों ने न्याय नहीं किया। आलोचकों ने उन्हें साहित्य में वह स्थान नहीं दिया जिसके वह अधिकारी थे। एक ओर जहां हिन्दी साहित्य का विद्यार्थी सरलता से महादेवी, निराला, पंत, प्रसाद के साहित्य से परिचय प्राप्त कर लेता हैं वहीं दूसरी ओर किसी विशेष प्रयास अथवा मार्गदर्शन के बिना नयी पीढ़ी शास्त्री जी के बहुमूल्य साहित्य से अपरिचित है। प्रस्तुत शोध कार्य शास्त्री जी के हिन्दी गीतिकाव्य का अनुशीलन कर हिन्दी गीतिकाव्य की परंपरा में उनकी उपस्थिति और अवदान को केंद्र में रखते हुए किया जाएगा। जिससे शास्त्री जी के गीतिकाव्य के क्षेत्र में उनके महत्व को समझने का मार्ग सरल हो सके।

5. शोध-उद्देश्य

प्रस्तुत शोध विषय 'हिन्दी गीतिकाव्य की परंपरा में आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री का अवदान' के निम्नलिखित संभावित उद्देश्य हो सकते हैं –

- ❖ गीतिकाव्य के अर्थ और स्वरूप से परिचय प्राप्त करना।
- ❖ हिन्दी गीतिकाव्य की विशाल परंपरा से परिचय प्राप्त करना।
- ❖ आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के गीतिकाव्य से परिचय प्राप्त करना।
- ❖ आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री जी के गीतिकाव्य की विशिष्टताओं को रेखांकित कर उनका सम्यक मूल्यांकन करना।
- ❖ हिन्दी गीतिकाव्य की परंपरा में आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के बहुमूल्य योगदान को सत्यापित करना।
- ❖ प्रस्तुत विषय के माध्यम से शास्त्री जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित कुछ अनछुए संदर्भों को प्रकाशित करना जिससे एक नवीन दृष्टि का विकास संभव हो सके।

6. शोध-प्रविधि

किसी भी शोध को एक निश्चित समय में उसके उद्देश्य तक पहुँचाने के लिए निर्धारित शोध-प्रविधि की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत शोध विषय हिन्दी गीतिकाव्य परंपरा में आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री का अवदान के अंतर्गत निम्नांकित शोध- प्रविधियों का उपयोग किया जायेगा।

- **गुणात्मक शोध-प्रविधि**
- **तुलनात्मक शोध-प्रविधि**
- **ऐतिहासिक शोध-प्रविधि**
- **विश्लेषणात्मक शोध-प्रविधि**
- **समीक्षात्मक शोध-प्रविधि**

गुणात्मक शोध प्रविधि के अंतर्गत मानव व्यवहार और उसे नियंत्रित करने वाले कारणों को समझा जाता है, इसलिए साहित्य के क्षेत्र के इस प्रस्तावित शोध-विषय में गुणात्मक शोध-प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। समकालीन गीतकारों और जानकीवल्लभ शास्त्री का मूल्यांकन करते समय **तुलनात्मक** शोध-प्रविधि का प्रयोग होगा। साथ ही साथ गीतिकाव्य के विकास-क्रम को समझते हुए उनके वर्तमान स्वरूप पर चिंतन का कार्य **ऐतिहासिक** शोध-पद्धति में होगा। इस क्रम में शोध से संबंधित सभी मूल.ग्रंथों, आलोचनात्मक.ग्रंथों, शास्त्री जी के साहित्य के महत्वपूर्ण चिंतकों की टिप्पणियों, पत्र-पत्रिकाओं आदि का गहन अध्ययन, चिंतन व विश्लेषण के माध्यम से उपयोग किया जायेगा जिसमें हमारी शोध-दृष्टि **गवेषणात्मक, विश्लेषणात्मक, समीक्षात्मक, आलोचनात्मक** और **मूल्यांकनपरक** होगी।

7. अध्याय-योजना

❖ **प्रस्तावना**

प्रथम अध्याय : आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के व्यक्तित्व व सृजनात्मकता के विविध आयाम

1.1 व्यक्तित्व के विविध आयाम

- ❖ आरंभिक जीवन
- ❖ रचनात्मक प्रेरणा
- ❖ साहित्यिक दृष्टि
- ❖ पशु- पक्षी और प्रकृति प्रेम

1.2 सृजनात्मकता के विविध आयाम

- ❖ आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री का काव्य
- ❖ आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के उपन्यास
- ❖ आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के नाटक
- ❖ आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के कहानी संकलन
- ❖ आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री का कथेतर साहित्य
- ❖ सम्मान व पुरस्कार

द्वितीय अध्याय : हिन्दी गीतिकाव्य की परंपरा और स्वरूप

2.1 गीतिकाव्य का अर्थ और स्वरूप

2.2 हिन्दी गीतिकाव्य का स्वरूप और संकल्पना

2.3 हिन्दी गीतिकाव्य का विकासात्मक अध्ययन

तृतीय अध्याय : आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री का गीतिकाव्य और उसकी अन्तर्वस्तु

3.1 आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के गीतिकाव्यों में विविधता

3.2 आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के सम्पूर्ण गीतिकाव्य का सम्यक विश्लेषण

चतुर्थ अध्याय : आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के गीतिकाव्य का शिल्प और सौन्दर्य

4.1 आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के गीतिकाव्य का वस्तुपक्ष

4.2 आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के गीतिकाव्य का भावपक्ष

4.3 आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री के गीतिकाव्य का शिल्पपक्ष

4.4 शास्त्री जी के गीतिकाव्य में लोकपक्ष और शास्त्रीयता का समन्वय

पंचम अध्याय : हिन्दी के प्रमुख गीतकार और आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

5.1 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

5.2 हरिवंश राय बच्चन और आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

5.3 भवानी प्रसाद मिश्र और आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

❖ **उपसंहार**

❖ **परिशिष्ट : संदर्भ ग्रंथ-सूची**

- ❖ आधार ग्रंथ
- ❖ सहायक ग्रंथ
- ❖ शब्दकोश
- ❖ ई. पत्र- पत्रिकाएं

निवेदन : प्रस्तुत शोध- विषय की रूपरेखा का यह अंतिम स्वरूप नहीं है अपितु आवश्यकता के अनुसार भविष्य में परिवर्तन संभव है।

शोध-निर्देशक — शोधार्थी

डॉ. नियति कल्प — विद्या वैभव भारद्वाज